Hkkjrh; turk ikVhZ

jk"Vªh; vf/kos'ku

eqEcbZ] egkjk"Vª

28&30 fnlEcj] 2005

jktuhfrd izLrko

भारतीय जनता पार्टी का गठन 6 अप्रैल 1980 को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को कायम रखने, सार्वजनिक जीवन में नई ऊर्जा लाने तथा लोकतंत्र का संपोषण करने के लिए हुआ था। अपने अस्तित्व के 25 वर्षों के दौरान भाजपा ने राष्ट्रवादी राजनीति को केन्द्र में स्थान दिलाया है, कांग्रेस तथा वामदलों की वैचारिक एवं राजनैतिक जकड़न को तोड़ दिया है तथा भारतीय राजनीति में आमूल–चूल परिवर्तन लाने में अपना योगदान दिया है।

भाजपा की स्थापना ऐसी पृष्ठभूमि में हुई जब, केन्द्र में पहली गैर–कांग्रेसी सरकार के प्रयोग से उपजी निराशा जनता में छाई हुई थी। यद्यपि पार्टी का प्रभाव प्रारम्भ में बहुत सीमित था फिर भी ऐसे लोगों के लिए जो कांग्रेसी कुशासन और उसके चलते सार्वजनिक जीवन में आयी गिरावट से मुक्ति चाहते थे, भाजपा एक आशा की किरण बनकर आई। भाजपा ने भारत की जनता में नई उम्मीद जगाई।

यह भाजपा की गुणात्मक विशेषता ही थी कि वह दशकों से चले आ रहे एक–दलीय प्रभुत्व को समाप्त कर सकी। भाजपा सिद्धांतों के लिए खड़ी हुई, उसकी जड़ें राष्ट्रवाद की विचारधारा में जमीं हुई थी। उसके अपने इन गुणों और लाखों पार्टी कार्यकर्ताओं के निःस्वार्थ समर्पण का ही परिणाम था कि पार्टी का पूरे भारत में सामाजिक एवं भौगोलिक विस्तार हुआ। भाजपा ने ऐसे मुद्दे एवं विषय उठाए जो भारत की आत्मा के तारों को झंकृत करते थे। छद्म सर्वानुमति से अघाए हुए करोड़ों भारतीयों के लिए भाजपा एक ताजा हवा का झोंका बनकर आई। जनसमर्थन और जनता के मन में परिवर्तन की ललक के बल पर आगे बढ़ी। भाजपा अन्य दलों की तरह केवल एक राजनैतिक दल ही नहीं है, बल्कि एक आंदोलन भी है।

भाजपा की 25 वर्षीय यात्रा का चरम तब आया जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री चुने गए तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गटबंधन का गठन हुआ। अभूतपूर्व शुभेच्छाओं एवं आशाओं के साथ, राजग सरकार की संवाहक शक्ति के रूप में, भाजपा ने देश को एक स्वाभिमानी, आत्म विश्वासी एवं प्रखर विश्व शक्ति बनाने की राह पर अग्रसर किया। भाजपा ने भारत की वास्तविक संभावनाओं को सबके सामने प्रस्तुत किया।

भाजपा को केन्द्र में सरकार के अपने प्रदर्शन पर गर्व है। भाजपा श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा दिए गए प्रेरणादायी नेतृत्व पर भी गर्व की अनुभूति करती है।

दुर्भाग्यवश, राजग वर्ष 2004 के आम चुनाव में अपेक्षित बहुमत हासिल नहीं कर पाया। केवल सात सीटों के अन्तर ने भाजपा को लोकसभा में सबसे बड़े दल की मान्यता से वंचित कर दिया। कांग्रेस के लिए सत्ता में आना एकदम अनपेक्षित वरदान सरीखा था। हमें एक बड़ा झटका लगा लेकिन इसके बावजूद एक प्रमुख लोकतांत्रिक संगठन के रूप में हमारी पार्टी की प्रतिष्ठा बरकरार है। जबकि दूसरे दल एक परिवार की मिल्कियत की तरह चलाए जाते हैं।

यही कारण है कि देश और हमारी जनता भाजपा से अन्य दलों की अपेक्षा कहीं अधिक उम्मीदें लगाए हुए हैं। पार्टी को देश की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहना होगा।

भाजपा रजत जयंती के अवसर पर स्वयं को राष्ट्र की सेवा में पुनः समर्पित करती है और सिद्धांतों की राजनीति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दुहराते हुए अपनी कमियों को निरन्तर सुधारने का संकल्प लेती है। भाजपा के कार्यकर्ता सार्वजनिक जीवन को सेवा के मिशन के रूपमें जारी रखेंगे।

सार्वजनिक जीवन में गुणवत्ता पर जोर डालने की आवश्यकता काफी बढ़ी है। मई 2004 में जब से कांग्रेस ने सत्ता सम्भाली है उसने भ्रष्टाचार के निर्लज्ज मामलों की लीपापोती करने में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया है। यह भारत के लिए राष्ट्रीय अपमान का विषय था कि कांग्रेस पार्टी और भारत के विदेश मंत्री को संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित एक जांच समिति ने एक अन्तर्राष्ट्रीय तेल घोटाले में ''गैर संविदागत लाभार्थी'' के रूप में नामित किया था। इस प्रकरण में सरकार द्वारा कार्रवाई करवाने में जन आक्रोश, मीडिया के खुलासे और भाजपा के दबाव की मुख्य भूमिका रही। सरकार ने ढीले–ढाले मन से कार्यवाही तो की किन्तु जांच एजेंसियां गठित करते समय उसे विदेशों में जांच करने के लिए अपेक्षित शक्तियों से लैस नहीं किया।

भाजपा सरकारी निर्णयों को प्रभावित करने में विदेशी धन के बढ़े हुए प्रयोग पर गम्भीर चिंता व्यक्त करती है। अनाज के बदले तेल घोटाला राष्ट्रीय हितों को नजरअन्दाज करने का कोई अकेला उदाहरण नहीं है। इस साल प्रकाशित हुए ''मित्रोखिन आर्काइव्स'' ने कांग्रेस और कम्युनिस्टों द्वारा पैसे के बदले देश के सुरक्षा को बेचने का शर्मनाक इतिहास उजागर किया। ''मित्रोखिन आर्काइव'' ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रायोजित प्रकाशन है और के.जी.बी. द्वारा प्रेरित अधीनता की छोटी सी झलक देता है। सरकार और वाम दलों ने मिलकर इस विषय पर संसद में बहस नहीं होने दी। भाजपा सरकार से यह मांग करती है कि वह ब्रिटिश सरकार पर अपने राजनायिक दबाव का प्रयोग करके मित्रोखिन कागजातों के प्रासंगिक दस्तावेजों को देश को उपलब्ध कराए।

यूपीए सरकार द्वारा वोल्कर रिपोर्ट एवं मित्रोखिन द्वारा किए गए खुलासों पर जिस तरह परदा डाला गया है उसको देखते हुए ''प्रश्न के बदले पैसा'' काण्ड में शामिल 11 सांसदों पर कार्रवाई करने में की गई तत्परता में काफी अन्तर दिखता है। भाजपा अपने कुछ निर्वाचित प्रतिनिधियों के इसमें शामिल होने पर निस्संकोच शर्म महसूस करती है। संसदीय लोकतंत्र में ऐसे व्यक्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। किन्तु पार्टी इस बात पर भी अपनी चिंता व्यक्त करती है कि अनुशासनात्मक कार्यवाही की प्रक्रिया को तिलांजलि देने से राजनीति में बदला लेने का एक नया अध्याय शुरु हो सकता है।

भ्रष्टाचार का विरोध पक्षपात के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। सरकार तब तक नैतिकता के उच्च मानदण्डों का दंभ नहीं भर सकती जब तक केन्द्रीय मंत्रिपरिषद से विभिन्न घोटालों के दागी मंत्री हटाए नहीं जाते।

पिछले 18 महीनों में दलगत लाभ के लिए यूपीए सरकार ने राष्ट्रीय हितों के साथ अनेक समझौते किए हैं। आन्तरिक सुरक्षा के क्षेत्र में सरकार की अक्षमता के कारण नक्सली हिंसा में जबरदस्त तेजी आयी है। जहानाबाद की जेल में नक्सलियों का घुस जाना और मधुबन ब्लाक की घटना यह दर्शाती है कि नक्सली समूह मनमाने तरीके से काम कर रहे हैं। नक्सली देश में आन्ध्र प्रदेश से लेकर नेपाल तक एक 'लाल गलियारा' बनाना चाहते हैं। यूपीए सरकार के पास इस भयंकर खतरे से निपटने के लिए कोई निश्चित नीति नहीं है। यह सरकार तो नेपाल के माओवादियों के साथ भी पींगें बढ़ा रहा है।

सरकार की अल्पदृष्टि राष्ट्र के लिए मंहगी साबित हो रही है। असम के कर्बी आंगलांग तथा उत्तरी कछार हिल्स जिले में सदियों से शांति और सौहार्द से रह रहे कर्बी और दिमासाओं के बीच जब तनाव पैदा करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा था तब कांग्रेस सरकार ने अपनी आंखें मूंद ली थी। ऐसा आभास होता है कि असम की कांग्रेस सरकार ने देश की अखण्डता पर इन हमलों को करवाने वालों के साथ हाथ मिला लिया है। यह सरकार पूरे पूर्वोत्तर भारत में लगातार चल रहे बंगलादेशी नागरिकों की घुसपैठ के प्रति तनिक भी चिंतित नहीं है।

जब से यूपीए सरकार सत्ता में आयी है महिलाओं के प्रति अपराध बढ़े हैं। विशेष रूप से ट्रेनों में बलात्कार की घटनाएं गहरी चिंता का विषय है।

कांग्रेस अपने अल्पसंख्यकवाद और वोट–बैंक की राजनीति के पुराने खेल को फिर से खेलने लगी है। संविधान में हुए 104वें संशोधन में अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं को अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए सीटें सुरक्षित करने के प्रावधान से बचा लिया गया। भाजपा यह मांग करती है कि आरक्षण बिना अपवाद के होना चाहिए। अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक का विभाजन करके यह सरकार समाज का विभाजन कर रही है।

यूपीए सरकार शिक्षा के साथ विनाशकारी खेल खेलने की नीति जारी रखे हुए है। उसके तथाकथित 'डिटोक्सिफिकेशन' कार्यक्रम ने स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भयंकर विकृतियां पैदा कर दी हैं। भाजपा देश के युवाओं के समक्ष भारतीय राष्ट्रत्व की विकृत तस्वीर प्रस्तुत करने के सभी प्रयासों के विरुद्ध संघर्ष करेगी।

यूपीए सरकार के निर्णय लेने की प्रक्रिया में वाम दलों की सक्रियता देश के शासन चलाने में कई विकृतियां उत्पन्न कर रही है। वाम दल दोनों पालों में खेलते हुए बिना किसी जिम्मेदारी के अपनी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। वह सरकार पर समय देख कर भौंकते हैं लेकिन कभी काटते नहीं। वे दुहरे खेल की दोषी हैं।

लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए वामदल नहीं जाने जाते। कांग्रेस और राजद के साथ मिलकर इन्होंने बिहार में चुनाव आयोग की राह में बाधाएं खड़ी करने की शर्मनाक भूमिका निभाई। भाजपा चुनाव आयोग को बिहार में शान्तिपूर्ण, स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनाव करवाने के लिए बधाई देती है। पार्टी चुनाव आयोग से अनुरोध करती है कि वह पश्चिम बंगाल में भी इसी तरह का कड़ा रुख अपनाए जहां लोकतंत्र को 'वैज्ञानिक रिगिंग' के जरिए योजनाबद्ध रूप से नष्ट किया जा रहा है।

भाजपा सभी राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक शक्तियों को हाथ मिलाने एवं संयुक्त रूप से आगामी विधानसभा चुनावों में वामदलों का मुकाबला करने के लिए एकजुट होने का आह्वान करती है। बिहार में हुए हाल के चुनावों ने यह दिखाया है कि संकल्पबद्ध एवं एकजुट होकर यदि राजनीतिक अव्यवस्था और कुशासन का विरोध किया जाए तो जनता का विश्वास जीता जा सकता है।

भाजपा को एक प्रभावशाली विपक्ष की अपनी भूमिका निभाने की जिम्मेदारी का भलीभांति अहसास है। राजग के अपने सहयोगियों के साथ मिलकर भाजपा यूपीए के कारनामों को उजागर करती रहेगी तथा वंशवादी राजनीति का विरोध करती रहेगी। ऐसे राज्यों में जहां भाजपा सरकार में है, भाजपा शासन के जरिए जनता को लाभ पहुंचाने के लिए भरसक प्रयास करेगी।

आने वाला समय भाजपा के लिए चुनौतियों एवं अवसरों से भरा हुआ होगा। यूपीए अपने अन्दरूनी विरोधाभासों में बुरी तरह उलझा हुआ है और उसमें तालमेल का अभाव भी है। सरकार के विकल्प के रूप में राजग मौजूद है। भाजपा को अपनी भावी जिम्मेदारियों का ध्यान रखना होगा और जनता का विश्वास जीतने के लिए एकजुट होकर कार्य करना होगा तथा अपनी खोई हुई जमीन वापस पानी होगी। देश में पार्टी के हितैषियों एवं शुभचिन्तकों की बड़ी संख्या मौजूद है। अपने शुद्ध आचरण, मधुर व्यवहार तथा सिद्धांतपरक राजनीति के बल पर उन्हें अपने साथ जोड़ना होगा।

पच्चीस वर्षों का पार्टी का इतिहास, भविष्य के मार्ग के लिए एक सबक है। यह रजत जयंती अधिवेशन यह संकल्प लेता है कि हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद तथा मूल्य आधारित राजनीति की नींव पर एक समृद्ध और शक्तिशाली भारत का निर्माण करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे।

———